अनुक्रमणिका Content

आमुख :-

विषय का महत्व और चयन, विषय का स्पष्टीकरण और शोध की सीमाएँ, ज्ञान के विस्तार में प्रस्तुत प्रबंध का योगदान ।

प्रथम अध्याय :-

ऐतिहासिक उपन्यास विषयक सैद्धान्तिक विचार

पृष्ठ :- १-५६ ।

इतिहास :- व्युत्पत्ति और अर्थ, ऐतिहासिक धारणाएँ, निष्कर्ष, इतिहास सम्बन्धी भारतीय दृष्टिकोण, इतिहास का नवीन दृष्टिकोण, इतिहास की सीमा रेखा, उसका क्षेत्र अवं प्राप्य सामग्री ।

उपन्यास :- शब्दार्थ और परिभाषा, निष्कर्ष, उपन्यास के विभिन्न तत्व ।

ऐतिहासिक उपन्यास :- ऐतिहासिक उपन्यास और इतिहास का तुलनात्मक विवेचन, निष्कर्ष, ऐतिहासिक उपन्यास परिभाषा, ऐतिहासिक उपन्यासकारों के तद्विषयक विचार, निष्कर्ष, ऐतिहासिक उपन्यास के तत्व, रचनागत उद्देश्य, ऐतिहासिक उपन्यासों में काल्पनिक तथ्यों के योग की सीमा, ऐतिहासिक उपन्यासों का वर्गीकरण

द्वितीय अध्याय :-

हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा

पृष्ठ :- ५७-१०९

परंपरा का विभाजन, आरंभिक युग और विकास युग, आरंभिक युग के उपन्यासकार तथा उनकी कृतियाँ, निष्कर्ष, विकास युग के उपन्यासकार तथा उनकी कृतियाँ, इतर रचनाएँ, निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय :-

गुजराती साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा

पृष्ठ :- १०२-१४०

परंपरा का विभाजन, आरंभिक युग और विकास युग, आरंभिक युग के उपन्यासकार तथा उनकी रचनाएँ, विकास युग के उपन्यासकार तथा उनकी रचनाएँ, इतर रचनाएँ, निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय :-

हिन्दी और गुजराती के विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास ।

पृष्ठ :- १४१-२७९ ।

ऐतिहासिक अेवं शिल्पगत अपेक्षा, प्रतिनिधि रचनाएँ, हिन्दी की प्रतिनिधि रचनाओं की ऐतिहासिकता, और उपन्यास-कला की दृष्टि से उनका विवेचन, गुजराती की प्रतिनिधि रचनाओं की ऐतिहासिकता, और उपन्यास-कला की दृष्टि से उनका विवेचन तुलनात्मक विश्लेषण तथा निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय :-

हिन्दी और गुजराती के समन्वयान्वित ऐतिहासिक उपन्यास

पृष्ठ :- २७०-३५४ ।

ऐतिहासिक अेवं शिल्पगत अपेक्षा प्रस्तुत वर्ग की हिन्दी और गुजराती प्रतिनिधि रचनाएँ, ऐतिहासिकता और उपन्यास-कला की दृष्टि से उनका समग्रतया विवेचन, तुलनात्मक विश्लेषण और निष्कर्ष ।

षष्ठ अध्याय :- ३५५-४०७ ।

हिन्दी और गुजराती के वातावरण प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास ।

पृष्ठ :- ३५५-४०७ ।

ऐतिहासिक और शिल्पगत अपेक्षा, हिन्दी और गुजराती को अेतद्विध प्रतिनिधि रचनाएँ, ऐतिहासिकता और औपन्यासिक कला की दृष्टि से उनका समग्रतया विवेचन, तुलनात्मक विश्लेषण और निष्कर्ष

सप्तम अध्याय :-

हिन्दी और गुजराती के कल्पना प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास

पृष्ठ :- ४०८-४४५

इनकी ऐतिहासिक और शिल्पगत स्थिति, हिन्दी और गुजराती की इस कोटि की रचनाएँ, उनका ऐतिहासिकता और औप-न्यासिक कला की दृष्टि से समग्रतया विवेचन, तुलनात्मक विश्लेषण और निष्कर्ष ।

अष्टम अध्याय :- ~~४५०-४५५~~

उपसंहार

पृष्ठ :- ४५०-४५५ ·

हिन्दी और गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों की परंपरा तथा उनकी उपलब्धियों का समग्रतया मूल्यांकन, अध्ययन गत भावी संभावनाएँ ।

परिशिष्ट- क :- श्री सत्यदेव वर्मा का पत्र।
ख :- अधीत ऐतिहासिक उपन्यासों की सूची।
ग :- संदर्भ ग्रन्थों की सूची ।
घ :- पत्र-पत्रिकाएँ, संदर्भित।
ङ :- अंग्रेजी के संदर्भ-ग्रन्थ ।

//////////////////////